धम्म जागरणा में भिक्षुमय हुआ मघवा समवसरण

श्रोता हुए बाग-बाग

बीदासर, 8 फरवरी, 2009।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु की मासिक तिथि माघ शुक्ला त्रयोदशी को बीदासर के तेरापंथ भवन स्थित श्रीमद् मघवा समवसरण में विशाल धम्म जागरणा का आयोजन हुआ। अर्हत वंदना के बाद मुनि दिनेश कुमार के 'चेत्य पुरुष जग जाये' व तेरापंथ महिला मण्डल के तेरापंथ प्रबोध के समुह गान के आगाज से शुरू हुए इस भक्ति की सुरीली सांझ में मुनियों और फनकारों ने एक से बढ़कर एक बेबाक प्रस्तुतियों ने समां बांध दी।

मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन' के सान्निध्य में आयोजित धम्म जागरणा कार्यक्रम में मुनि सुव्रत ने सिरियारी वाले, करोजी-करोजी बेड़ो पार, मुनि संबोध कुमार ने मन के गीत पुकारे तुमको सांवरिया आओ, मुनि श्रेयांस ने स्मृति बाबे भीखण री जन-जन जुग-जुग करसी, मुनि जंबू कुमार (मिंजूर) ने स्वामीजी आओ देखल्यो नैणा में तस्वीर, मुनि पीयुष कुमार ने भिक्षु को शीश झुकायें, मुनि विजयकुमार ने जग उजियारे, प्राणों से प्यारे, मन में बसा इक नाम, मुनि नीरज कुमार ने वंदन स्वीकारों म्हारा सिरीयारी रा सांवरा, मुनि स्वस्तिक कुमार ने म्हाने सिरियारी रो संत प्यारो लागे। मुनि महावीर कुमार ने जन-जन पुकारे भिक्षु हमारे, श्रद्धा से सरोबार करने वाले मधुर स्वरों की प्रस्तुति दी तो पूरा पांडाल ऊं अर्हम की गूंज से गूंज उठा।

इसी कड़ी में संघगान में चयनित अंकित चौपड़ा के भुल मत जाज्यो बाबलिये रो उपकार, अजय टेलर के आओ स्वामीजी, कमलसिंह दुगड़ के भिक्षु खुद आते हैं दर्श दिखाते हैं, श्रीमती सुप्यार गोलछा ओ स्वामीजी रो नाम म्हारे मन ने भायो है, श्रीमती सरला भुतोड़िया ने दर्शन दो भिक्षु प्राण बुलाते हैं, सुलोचना जैन ऊं भिक्षु स्वामी सांसों में समाये के सुरीले स्वरों ने श्रोताओं को बाग-बाग कर दिया।

मंच संचालन श्रीमती पुष्पा बैंगानी ने किया।

मुनियों ने किया विहार

आचार्य महाप्रज्ञ से आशीर्वाद लेने के बाद मुनि विजयराज ने हरियाणा के सिवाणी, मुनि प्रशांत कुमार ने श्रीगंगानगर, मुनि दर्शन कुमार ने मेवाड़ के लिये विहार किया।

चार नये वर्ग बने

145वें मर्यादा महोत्सव के अवसर पर साधु-साध्वियों के लिये सौगातों की कड़ी में आचार्य महाप्रज्ञ ने तेरस शनिवार को केन्द्र में चार नये वर्गों की घोषणा करते हुए नया अध्याय लिख दिया। आचार्य महाप्रज्ञ ने मुनि राजेन्द्रकुमार, मुनि कुमार श्रमण, मुनि रजनीश कुमार, मुनि जंबूकुमार (मिंजूर) को साझपति के रूप में (वर्ग व्यवस्थापक) नियुक्ति की। एक साथ चार वर्गों की घोषणा का यह पहला अवसर था, जिससे पूरे धर्मसंघ में खुशी की लहर दौड़ गई।

परिवर्तन की पहल स्वयं से करें : आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 8 फरवरी, 2009।

तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने सम्बोधन में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा - आज का युग वैज्ञानिक युग है, इस युग में जितनी तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं ऐसे में संस्औति और संस्कार को बचाये रखने में साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आचार्य महाप्रज्ञ तेरापंथ भवन के श्रीममद् मघवा समवसरण में ''महाप्रज्ञ के अमृत वचन'' पुस्तक के लोकार्पण कार्यक्रम में बोल रहे थे। कालजयी महर्षि का मानना था कि चयन करने वालों की अपनी दृष्टि होती है, पुस्तक के संयोजन में जिस दृष्टि का उपयोग हुआ है वह चेतना में एक नई ऊर्जा पैदा कर सकती है 'बहुत व्यस्त हूं' कहने वाले लोगों को प्रेरणा पाथेय देते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा - आदमी व्यस्तता के क्षणों में समय नियोजन करे तो अस्त व्यस्तता से स्वस्थता की ओर जाया जा सकता है। धर्म का काम है चेतना का रूपांतरण आज नारे दर्शन की आवश्यकता है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत की शुरूआत की यह नया दर्शन है, अगर अणुव्रत के हार्द को समझ लिया जाता तो देश की स्थिति इतनी बदतर नहीं होती। आपने कहा - धर्म का प्रवचन सिर्फ मनोरंजन के लिये ना हो, जिससे परिवर्तन ना हो, वह समाज का भला नहीं कर सकता। जो सचमुच बदलाव देखना चाहते हैं वे स्वयं से परिवर्तन की पहल करें।

युवाचार्य महाश्रमण ने उत्तराध्ययन के एक सूत्र का उल्लेख करते हुए कहा - आत्मा स्वयं ही कर्त्ता और विकर्ता है। जीवन की यात्रा में आदमी शुभ और अशुभ जैसा कर्म करता है उसे उसी अनुरूप फल मिलता हे। जीवन अनित्य है संसार असार है और मृत्यु सुनिश्चित है जो इस अनित्यता का बोध कर लेता है वह पाप कम्र से बच जाता है। सांसे कब कहां और कैसे किकल जाये इस संदर्भ में कुछ भी निश्चित नहीं है, इसलिए मनुष्य को मृत्यु को समाने रखकर धर्म करने में जुट जाना चाहिए। युवाचार्य महाश्रमण ने आचार्य तुलसी द्वारा रचित ''सजग बनो बीती जा रही घड़ी'' का प्रसंगवश संगान करते हुए कहा - आदमी हर पल बीतने वाले समय के प्रति जागरूक रहे कि कोई भी क्षण प्रमाद में व्यर्थ ना खो जाये। जिसके साथ धर्म का पाथेय नहीं होता उसे पछतावे के सिवाय कुछ भी हासिल नहीं हो सकता।

आचार्य महाप्रज्ञ के प्रवचनों की सीरिज मशहूर औति ''महाप्रज्ञ ने कहा'' के चुनिंदा विचारों की महत्त्वपूर्ण पुस्तक ''महाप्रज्ञ के अमृत वचन रविार को आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण को समर्पित करते हुए 'ऊं अर्हम' की गगनभेदी ध्वनि के बीच लोकार्पित की गई। डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रा.लि. दिल्ली द्वारा प्रकाशित इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक का संपादन नरेश शांडिल्य ने किया। कार्यक्रम में पुस्तक के संदर्भ में साहित्यकार नरेश शांडिल्य, राजेश चेतन ने विचार व्यक्त करते हुए इन्द्र बैंगानी के साथ पुस्तक भेंट की। मंच संचालन मुनि हिमांशु कुमार ने किया।

- अशोक सियोल
99829 03770